1 हे जिन ! तेरे मैं शरणे आया...

हे जिन ! तेरे मैं शरणे आया
हे जिन ! तेरे मैं शरणे आया।
तुम हो परम दयालु जगत गुरु,
मैं भव भव दुख पाया ।। हे जिन.....

मोह महा दुठ घेर रहो मोहि,
भव कानन भटकाया।
नित निज ज्ञान चरन निधि विसरयो,
तन धन कर अपनाया ।। हे जिन.....

निजानन्द अनुभव पियूष तज,
विषय हलाहल खाया।
मेरी भूल मूल दुख दाई,
निमित्त मोह विधि थाया ।।हे जिन.....

सो दुठ होत शिथिल तुमरे ढिंग,
और न हेतु लखाया।
शिव स्वरूप, शिव मगदर्शक तुम,
सुयश मुनीगण गाया ।। हे जिन.....

तुम हो सहज निमित्त जग हित के,
मो उर निश्चय भाया।
भिन्न होहुं विधि तें सो कीजे,
'दौल' तुम्हें शिर नाया ।। हे जिन.....

हे जिनेन्द्र भगवान ! मैं आपकी शरण में आया हूँ क्योंकि आप परम दयालु और पूर्ण जगत के गुरू हैं तथा मैं अनंतकाल से इस संसार रूपी भवा टवी में दुःख पा रहा हूँ।

मुझे इस महा मोह रूपी दुष्ट ने अपने वश में करके कष्ट दिया है और इस संसार रूपी वन में भटकाया है। मैं सदा से ही अपने ज्ञान और चारित्र रूपी निज संपदा को भूलकर शरीर और धन रूपी जड़ संपदा को ही अपना मानता आया हूँ ।

हे प्रभो! मैंने अपनी आत्मानंद के अनुभव रूपी अमृत को त्यागकर विषय रूपी जहर का ही सेवन किया। मूल में तो मैंने मेरी स्वयं की भूल के कारण ही दुःख भोगा है, मोह कर्म तो निमित्त मात्र ही रहा है।

हे प्रभो! यह दुष्ट मोह आपके सम्मुख ही कमजोर पड़ता है, इसको नष्ट करने का मुझे और कोई कारण दिखाई नहीं देता। हे जिनेन्द्र देव! आप मोक्ष रूप परिणमित हो गये हैं और सभी को मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं इसलिये मुनिगण भी आपका यशगान करते हैं।

हे जिनदेव! आज मेरे ह्रदय में यह निश्चय हो गया है कि जगत के हित करने में आप ही सहज निमित्त हैं। अतः कवि दौलतराम जी आपको नमस्कार करते हुये भावना भाते है कि प्रभु आप ऐसा कार्य कीजिये कि जिस कारण से मैं कर्मों से सदा के लिये मुक्त हो जाऊँ।